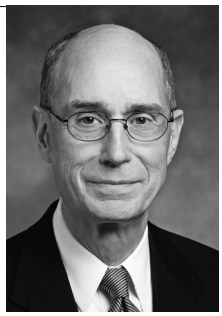

अध्यक्ष हेनरी बी. आइरिंग द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

परिवार और प्रार्थना

एक बार, जब मैं रात भर अपने पिता के बिस्तर के साथ बैठा हुआ था, वे अपने बचपन के बारे में बात कर रहे थे । उन्होंने कठिन समयों में अपने माता-पिता के प्रेम के विषय में और उनके स्वर्गीय पिता और उद्धारकर्ता के प्रेम विषय में बताया था । मैं जानता था वह कैंसर से मर रहे थे, इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं हुआ कि वे उनके स्वर्गीय पिता के प्रेम और संसारिक पिता की दया के प्रति अपनी अनुभूतियों को कई बार मिला दिया करते थे । मेरे पिता अक्सर कहते थे कि जब वे प्रार्थना करते, तो वे सोचते थे वे अपने मन में स्वर्गीय पिता की मुस्कान को देख सकते थे ।

उनके माता-पिता ने उनको उदाहरण द्वारा इस तरह प्रार्थना करना सीखाया था मानो वह परमेश्वर से बातें कर रहे हो और कि परमेश्वर उन्हें प्रेम से उत्तर देगा । उन्हें उस उदाहरण की अंत तक जरूरत पड़ी । जब दर्द असहनीय हो गया, हमने सुबह उन्हें उनके बिस्तर पर घुटनों के बल झुका पाया । वे इतने कमजोर हो गये थे कि वे बिस्तर पर वापस नहीं लेट पाए थे । उन्होंने हम बताया वे अपने स्वर्गीय पिता से पूछने के लिये प्रार्थना कर रहे थे क्यों उन्हें इतना कष्ट सहना पड़ रहा है जबकि उन्होंने हमेशा अच्छा होने का प्रयास किया था । उन्होंने बताया उन्हें दया भरा उत्तर मिला थाः ''परमेश्वर को बहादुर बेटों की जरूरत है ।''

और इस तरह वे अंत तक योद्धा बने रहे, भरोसा करते हुए कि परमेश्वर उन्हें प्रेम करता था, उन्हें सुनता था, और उन्हें ऊपर उठायेगा । वे आशीषित थे कि उन्हें जीवन में बहुत जल्दी सीख लिया और कभी नहीं भूले थे कि प्रेम करने वाला परमेश्वर केवल प्रार्थना भर निकट है ।

इसलिये प्रभु ने माता-पिता को सीखाया, ''और वे अपने बच्चों को भी प्रार्थना करना, और प्रभु के सम्मुख सच्चाई पर चलना सीखाएंगे'' (सिऔरअ 68:28) ।

यीशु मसीह का सुसमाचार—मॉरमन की पुस्तक और सभी पौरोहित्य कुजियों के साथ जोकि परिवारों को बांध सकती हैं—पुनास्थापित किया जा चुका है—क्योंकि जोसफ स्मिथ ने लड़के के रूप में विश्वास के साथ प्रार्थना की थी । उन्होंने इस विश्वास को प्रेम करने वाले और विश्वासी परिवार में पाया था ।

बीस साल पहले प्रभु ने परिवारों को प्रथम अध्यक्षता और बारह प्रेरितों की परिषद द्वारा ''परिवारः दुनिया के लिये एक घोषणा'' में यह सलाह दी थीः ''सफल विवाह और परिवार विश्वास, प्रार्थना, पश्चाताप, क्षमा, आदर, प्रेम, दया, कार्य, के सिद्धांतों और हितकर मनोरंजक गतिविधियों पर स्थापित किये जाते और कायम ---रहते हैं ।''[1]

हम भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ के परिवार का उनका पालन पोषण करने के लिये अत्याधिक आभारी हैं । उनका परिवार ने न केवल विश्वास और प्रार्थना का उदाहरण रखा बल्कि पश्चात, क्षमा, आदर, प्रेम, दया, कार्य, और हितकारी मनोरंजक गतिविधियों को भी स्थापित किया ।

आपके बाद आने वाली पीढ़ियां अपने परिवार में प्रार्थना के उदाहरण के लिए आपको आशीषित कहेंगी । हो सकता है आप परमेश्वर के महान सेवक का पालन-पोषण न कर पाएं, लेकिन अपनी प्रार्थनाओं और विश्वास के अपने उदाहरणों द्वारा आप अच्छे और प्रिय शिष्यों का पालन-पोषण करने में प्रभु यीशु मसीह की मदद कर सकते हैं ।

प्रभु की सहायता करने के लिए आप जोकुछ भी करते हैं, उन सब के केंद्र में प्रार्थना रहेगी । ऐसे साधारण से लोग हैं जिन्होंने, जब प्रार्थना की, दूसरों को उनकी आंखें खोलकर उसे देखने के लिए प्रेरित किया । आप इस तरह के व्यक्ति बन सकते हैं ।

सोचें इसका उनके लिए क्या अर्थ हो सकता है जो आपके साथ पारिवारिक प्रार्थना में झुकते हैं । जब वे महसूस करते हैं कि आप परमेश्वर के साथ विश्वास से बातें करते हो, उनका विश्वास भी परमेश्वर के साथ बात करने के लिए बढ़ेगा । जब आप उन आशीषों के लिए जिन्हें वे जानते हैं परमेश्वर का धन्यवाद देने के लिए प्रार्थना करते हो, उनका विश्वास बढ़ेगा कि परमेश्वर उनसे प्रेम करता है और कि वह आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है और उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर भी देगा । यह पारिवारिक प्रार्थना में केवल तभी हो सकता है जब आपने

आपनी निजी प्रार्थना में बार-बार इसे अनुभव किया होगा ।

मैं अभी एक ऐसे पिता और माता के द्वारा आशीषित हुआ हूं जिन्होंने परमेश्वर से बात की थी । परिवारों में प्रार्थना की शक्ति के उनके उदाहरण के कारण अभी भी वे पीढ़ियां आशीषित हो रही हैं जो उनके बाद आई हैं ।

मेरे बच्चे और नाती-पोते प्रतिदिन मेरे माता-पिता के कारण आशीषित होते हैं । यह विश्वास कि प्रेमी पिता सुनता और प्रार्थनाओं का उत्तर देता है उन्हें विरासत में मिला है । आप अपने परिवार में ऐसी विरासत कायम कर सकते हैं । मैं प्रार्थना करता हूं कि आप ऐसा करेंगे ।

टिप्पणी

1. "The Family: A Proclamation to the World," *Liahona,* नवं. 2010, 129 ।

परिवार पर घोषणा की 20 वीं सालगिरह को मनाएं

''परिवारः दुनिया के लिए एक घोषणा'' उन सिद्धांतों को सीखाती है जो आज भी उतने ही उपयोगी हैं जितने वे 23 सितंबर 1995 को थे जब इस पहली बार प्रस्तुत किया गया था । लोगों या परिवारों को जिन्हें आप सीखाते हैं घोषणा की 20 वीं सालगिरह को मनाने का निम्न प्रकार से निमंत्रण दें:

1. इसमें शामिल उन सिद्धांतों की सूची बनाएं जो उनके लिए विशेषरूप से महत्वपूर्ण हैं । (देखें कैसे अध्यक्ष आइरिंग ने इसे ऊपर दिये संदेश में किया है ।)
2. चर्चा करें कैसे प्रत्येक सिद्धांत उन्हें आज और भविष्य में आशीष दे सकते हैं ।
3. उनके जीवनों में इन सिद्धांतों को शामिल करने और इन्हें दूसरों के साथ बांटने के लिए विशेष लक्ष्य बनाएं ।

युवा

प्रार्थना का अभ्यास करना

अध्यक्ष आइरिंग सीखाते हैं कि स्वर्गीय पिता के साथ मजबूत संबंधों के द्वारा आपका परिवार आशीषित हो सकता है ।

आप उसके साथ अपने संबंधों को अपनी प्रार्थनाओं में सुधार करके बेहतर बना सकते हैं ! यहां कुछ सुझाव हैं कि यह कैसे करना है:

अपनी प्रार्थना आरंभ करने से पहले, कुछ क्षणों के लिए विचार करें आप क्या कहना चाहते हैं । उन प्रश्नों या बातों पर विचार करें जो आपको परेशान कर रहे हैं—आप इन्हें लिख सकते हैं ताकि आप भूलें नहीं । इस समय अपने मन को दिन भर की भागदौड़ से भी मुक्त रखें ताकि आप पवित्र आत्मा की शांत अनुभूतियों पर केंद्रीत हो सकें । यदि प्रार्थना करते समय आपका मन इधर-उधर भटकता है, तो कल्पना करें स्वर्गीय पिता आपको सुन रहे हैं । स्पष्टरूप से प्रार्थना करें । प्रार्थना के अंत में आत्मा की प्रेरणा प्राप्त करने के लिए कुछ क्षण शांत रहें । आप अपनी अनुभूतियों को अपनी दैनिकी में लिख सकते हैं ।

स्मरण रखें कि प्रार्थना एक प्रकार का कार्य है, चिंता न करें यदि आरंभ में इसका अभ्यास करना कठिन लगता है ! प्रार्थना करने में आपका प्रयास परमेश्वर के साथ ऐसे संबंध बनाने में मदद करेंगा जिससे आने वाली पीढ़ियां आशीषित होंगी ।

बच्चे

प्रार्थना याद दिलाने वाला

अध्यक्ष आइरिंग सीखाते हैं कि परिवार के साथ प्रार्थना करना महत्वपूर्ण है । प्रतिदिन प्रार्थना करके आप अपने परिवार के लिए उदाहरण बन सकते हैं । यह आपके परिवार को प्रतिदिन प्रार्थना करना याद दिला सकता है । अध्यक्ष आइरिंग की अन्य वार्ता से इस उद्धरण को याद करें: ''स्वर्गीय पिता आपकी प्रार्थनाओं को सुनता है । वह आपसे प्रेम करता है । वह आपको नाम से जानता है'' (''Continuing Revelation,'' *Liahona,* नवं. 2014, 73) । इस उद्धरण को एक गत्ते या कागज पर लिखें और ऐसे स्थान पर लगा दें जहां आपको पूरा परिवार इसे देख सके । इस तरह आप हमेशा याद रख सकते हैं कि स्वर्गीय पिता आपको सुनना चाहता है !

© 2015 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/15 । अनुवाद अनुमतिः 6/15 । *First Presidency Message, September 2015* का अनुवाद । Hindi । 12589 294

यीशु मसीह के दिव्य गुणः शक्तिशाली और महिमा से परिपूर्ण

प्रार्थनापूर्वक इस सामाग्री को पढ़ें और क्या बांटना है को जानने के लिये खोजें । उद्धारकर्ता का जीवन और सेवाकाई उसमें कैसे आपके विश्वास को बढ़ाता और उन्हें आशीष देता है जिनका आप भेंट करने वाला शिक्षका के द्वारा ध्यान रखते हैं ? अधिक जानकारी के लिए lds.org *पर जाएं*

विश्वास, परिवार, सहायता

यह भेंट करने वाला शिक्षा संदेश उद्धारकर्ता के दिव्य गुणों के पहलुओं का वर्णन करने वाली श्रंखलाओं का भाग है ।

धर्मशास्त्र हमें सीखाते हैं कि यीशु मसीह ने ''स्वर्ग और पृथ्वी दोनों स्थानों पर सभी शक्तियां प्राप्त की थी और पिता की महिमा उसके साथ थी'' (सिऔरअ 93:17) । बारह प्रेरितों की परिषद के एल्डर एम. रसल बलार्ड ने कहा था कि इस शक्ति के द्वारा हमारे उद्धारकर्ता ने स्वर्गो और पृथ्वी की रचना की, चमत्कार किए, और गतस्मनी और कलवरी के दर्द को सहा था ।[1] जब हम इसे समझ जाते हैं, तो मसीह में हमारा विश्वास बढ़ेगा, और हम अधिक मजबूत बनेंगे ।

जब हम मंदिर अनुबंधों को बनाते और पालन करते हैं, प्रभु हमें अपनी शक्ति से आशीषित करता है । लिंडा के. बर्टन, सहायता संस्था की महा अध्यक्षा ने कहा थाः ''अनुबंध का पालन करने से मजबूती, शक्ति, और सुरक्षा मिलती है । ... हाल ही में मैं एक नई प्रिय मित्र से मिली थी । उसने गवाही दी थी कि मंदिर इंडोवमेंट प्राप्त करने के बाद, उसने प्रलोभनों का सामना करने की शक्ति को महसूस किया है ।''[2]

नफी अनुबंध की शक्ति की गवाही देता हैः ''मैं, नफी, ने परमेश्वर के मेमने की शक्ति को प्राप्त किया, जो प्रभु के अनुबंधित लोगों के ऊपर उतरी थी, ... और अधिक महिमा में वे धार्मिकता और परमेश्वर की शक्ति के साथ सशस्त्र हुए थे'' (1 नफी 14:14) ।

अतिरिक्त धर्मशास्त्र

यिर्मयाह 51:15; प्रकाशितवाक्य 1:6; याकूब 4:6–7; मूसायाह 3:17

धर्मशास्त्रों से

मारथा और मरियम के प्रति महान दया से भर कर, यीशु मसीह ने उसे परमेश्वर से प्राप्त शक्ति के द्वारा उनके भाई लाजर को मृत्यु से जीवित किया था ।

लाजर को कब्र में डालने के चार दिनों के बाद यीशु मारथा और मरियम के घर आया था । वे लाजर की कब्र पर गये, और यीशु ने आदेश दिया कि प्रवेश द्वार से पत्थर को हटा दिया जाए । यीशु ने मारथा से कहा, ''क्या मैंने तुम से नहीं कहा था, कि, यदि तुम विश्वास करोगी, तो परमेश्वर की महिमा देखोगी ?'' फिर उसने पिता परमेश्वर प्रार्थना की और ''ऊंचे स्वर में पुकार कर कहा, लाजर, निकल आ ।

''और वह कफन से हाथ पांव बंधे हुए निकल आया ।'' (देखें युहन्ना 11:1–45 ।) उद्धारकर्ता अपनी शक्ति का उपयोग हमें बचाने और शक्ति देने के लिए करता है । उसमें हमारा विश्वास बढ़ेगा जब हम स्मरण करते हैं कि वह शक्ति और महिमा से परिपूर्ण है ।

टिप्पणियां

1. देखें M. Russell Ballard, "This Is My Work and My Glory," *Liahona*, मई 2013, 18 ।
2. Linda K. Burton, "The Power, Joy, and Love of Covenant Keeping," *Liahona*, नवं. 2013, 111 ।

इस पर विचार करें

कैसे परमेश्वर की शक्ति आपको शक्ति और महिमा से सशस्त्र करता है ?

© 2015 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी अनुमतिः 6/15 । अनुवाद अनुमतिः 6/15 । *Visiting Teaching Message, September 2015* का अनुवाद । Hindi । 12589 294